Museum is a living organ of the society

संग्रहालय समाज का एक जीवन्त अंग है

Navin Kumar

Professor

Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. thIV Semester,

Dept. of A.I.H. & Archaeology, Patna University

Paper- Museology (E.C.)

संग्रहालय समाज का एक जीवन्त अंग है। इस प्रश्न पर विचार करने के पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि संग्रहालय किसको कहते हैं और इसका उद्देश्य क्या है। वस्तुतः संग्रहालय वह स्थान है जहाँ प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया जाता है। ये वस्तुएँ हमारी प्राचीन धरोहर है। मानव ने अपने विकास को इस लंबे दौर में जो वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक प्रगति की उससे संबंधित वस्तुओं का संकलन एवं सुरक्षा के लिए संग्रहालयों की आवश्यकता होती है। इनमें ये वस्तुएं संग्रहित की जाती है ताकि इसे लोग देख सकें। और इसका अध्ययन कर सकें और अपनी अतीत को पहचाने। विज्ञान की प्रगति के विभिन्न आयामों के विषय में जाने। विभिन्न युगों की सांस्कृतिक उपलब्धियों को पहचाने। इस प्रकार अपने आप को जाने, अपने देश को पहचाने।

संग्रहालयों का अपना शैक्षणिक महत्व है। आशुतोष मुखर्जी के अनुसार संग्रहालय ऐसी संस्था के रूप में जाना जाता है जिसमें ऐसी वस्तुओं को सुरक्षित रखने की व्यवस्था हो जो प्रगति की छटाओं और मनुष्य के कार्यों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे। जिनका उपयोग लोगों के मनोरंजन तथा ज्ञान की वृद्धि के लिए हो। उनका विचार है कि संग्रहालय को ऐसा होना चाहिए जो तीन

मुख्य कार्य कर सकें। पहला कला एवं विज्ञान के नमूनों का संग्रह एवं उनकी सुरक्षा दूसरा उनकी व्याख्या एवं उसकी जांच पड़ताल और तीसरी ऐसी व्यवस्था करना जिससे लोगों की रूचि इसमें बढ़े।

हमारे देश में छोटे–बड़े अनेकों संग्रहालय हैं। सरकार का ध्यान संग्रहालयों की स्थापना कि ओर गया है। इसका मुख्य उद्देश्य हमारे सांस्कृतिक अवशेष नष्ट न हो जाए, उन्हें इनमें सुरक्षित रखा जा सके और इन्हें देखने समझने का अवसर आम लोगों को प्रदान किया जा सके।

प्रारंभ में संग्रहालय व्यक्तिगत मनोरूचि एवं प्रयास का प्रतिफल होता था। ऐसे व्यक्ति प्राचीन वस्तुओं का संग्रह करते थे। ये अपने मकानों की गलियारों बैठकखानों, बरामदों आदि में पत्थर की मूर्तियों, धातु की मूर्तियों, चित्रकारी के नमूने तथा विभिन्न प्रकार के विचित्र सामग्रियाँ एकत्रित करते थे और अपने घर आने वाले मेहमानों को दिखला कर गौरवान्वित अनुभव करते थे। धनीमानी व्यक्ति राजा–महाराजा इस मद पर काफी धन व्यय करते थे। उनका महल ऐसे दर्शनीय वस्तुओं से भरा होता था। हैदराबाद का निजाम द्वारा संग्रहित ऐसी वस्तुएँ सलारजंग संग्रहालय में देखा जा सकता है। परंतु ऐसे संग्रहालय निर्जीव होते थे। ईंटों पत्थरों का संग्रह होते थे, भवन नहीं। विभिन्न रंगों के धब्बे होते थे, कोई चित्र नहीं। वस्तुतः इस दृष्टिकोण से संग्रहालय की व्यवस्था में नई क्रांति आई है। हमारे संग्रहालय नृउद्देश्य नहीं हैं, निर्जीव नहीं है, वह बोलते हैं, अतीत की कथा सुनाते हैं। वर्तमान को सामने रखते हैं और प्रांत की सीमा तोड़कर संपूर्ण भारत का चित्र हमारे सामने उपस्थित करते हैं तथा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संग्रहालयों में कैसी वस्तुएं संग्रहित की जाती है। इसमें प्रस्तर धातु, मिट्टी तथा अन्य सामग्रियों से बनी प्राचीन मूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ संग्रहित की जाती है। विभिन्न कार्यों से संबंधित ये वस्तुएँ हमारे शिल्पकला के विकास की कथा हमारे समक्ष रखते हैं।

विभिन्न युगों की कलात्मक विशेषताओं से हमें परिचित कराते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें प्राचीन पांडुलिपियों, अभिलेख, सिक्के तथा चित्र संग्रहित किए जाते हैं। वस्तुतः प्राचीन काल से लेकर अब तक मानव के द्वारा कला एवं विज्ञान के क्षेत्र में जो विशेष योगदान दिया गया है उसके अवशेष अथवा नमूने इन संग्रहालय में रखे जाते हैं। इन्हें इस प्रकार प्रदर्शन के लिए सजाया जाता है कि संग्रहालय के दीर्घाओं में घूमते समय ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि हम अतीत में पहुंच गए हैं और उन युगों की वस्तुओं को देखकर तत्कालीन मानवों के समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं।

आज भारतीय संग्रहालयों का यही उद्देश्य है कि वे हमें अपने अतीत से परिचय कराएं। पूर्वी भारत में रहने वालों को पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण भारत में रहने वाले अपने भाई बंधुओं के सांस्कृतिक विरासत से परिचय करा कर उन्हें भी भारतीय अतीत की उच्चता से गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान करें। बड़े–बड़े संग्रहालय में देश के विभिन्न भागों की वस्तुओं का संग्रह होता है परंतु स्थानीय संग्रहालय में केवल उसी क्षेत्र की सांस्कृतिक उपलब्धियों को ही संग्रहित किया जाता है। उसी क्षेत्र से संबंधित मूर्तिया, मृदभांड, अभिलेख, सिक्के तथा अन्य वस्तुएँ ऐसी संग्रहालयों में रखे जाते हैं। इन संग्रहालयों में घूमने से हमें उस स्थान अथवा क्षेत्र विशेष की कला एवं उसके इतिहास का समुचित ज्ञान होता है।

संग्रहालय केवल अतीत का आईना नहीं होता। ऐसे संग्रहालय भी है जो हमें किसी विशेष वस्तु की क्रमिक विकास की जानकारी देते हैं। पुलिस संग्रहालय, रेल ट्रांसपोर्ट संग्रहालय, आर्ट्स एवं क्राफ्ट संग्रहालय, विज्ञान एवं तकनीकी संग्रहालय, आदि ऐसे ही संग्रहालय हैं। इन संग्रहालयों में इन क्षेत्रों में जो प्रगति हुई है, उसे दिखाने के लिए इस प्रगति की प्रक्रिया के विभिन्न आयामों के नमूने रखे जाते हैं तथा इन क्षेत्रों में जो हमारी अब तक की उपलब्धि है उससे हमें परिचित कराया जाता है।

कतिपय संग्रहालय महान व्यक्तियों के जीवन से संबंधित होते हैं जैसे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के निवास स्थान को संग्रहालय का रूप दिया गया। इन व्यक्तियों के दैनिक जीवन के व्यवहार की वस्तुओं से लेकर उनके कार्य से संबंधित चित्रों के द्वारा उनके संपूर्ण व्यक्तित्व को सामने रखने का प्रयास किया गया। अगर हम इलाहाबाद के आनंद भवन तथा नई दिल्ली की तीन मूर्ति भवन में घूमें तो हमें पग–पग पर पंडित नेहरू और उनके परिवार के सदस्यों की उपस्थिति का अनुभव होगा।

भारत की जनजातियों की कला एवं कारीगरी तथा लोककला का संग्रह एवं प्रदर्शन के लिए संग्रहालयों की स्थापना की आवश्यकता लोगों ने अब समझा है और इस क्षेत्र में भी प्रगति हुई है। अगर हमलोग लोक कला के प्राचीन स्वरूप को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के दौर में भूलना अथवा खोना नहीं चाहते तो इन नमूनों को ढूंढकर संग्रहालय में सुरक्षित रखना होगा।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संग्रहालय एक महत्वपूर्ण संस्था है। हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और जो अंग निर्जीव नहीं है। सजीव हम उसे कहते हैं जो जन्म लेता है, जिसका विकास होता है और जो बोलता है। इस अर्थ में संग्रहालय लोगों अथवा सरकार के प्रयास से स्थापित होता है, दिनों दिन उनमें संग्रहित वस्तुएं बढ़ती जाती है और वह समृद्ध होता जाता है। इनमें संग्रहित वस्तुएं अगर सही ढंग से प्रदर्शन के लिए सजाए जाए तो मौन रहकर भी ये उस युग की कथा हमें सुनाते हैं। मथुरा पुरातत्व संग्रहालय में घूमने वाला व्यक्ति क्या मथुरा कला शैली की विशेषताओं से परिचित नहीं होता? किसी भी संग्रहालय की दीर्घा हमें वैसी ही अनुभूति देती है। अतः हम बिना किसी हिचकिचाहट के संग्रहालय को समाज का सजीव अंग कह सकते हैं।